डॉ. अनिरुद्ध प्रसा
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज

उर्वशी (दिनकर)

प्रश्न : 'उर्वशी' काव्य के आधार पर उर्वशी का चरित्र - चित्रण कीजिए।

उत्तर : दिनकर द्वारा रचित 'उर्वशी' महाकाव्य हिन्दी साहित्य का धरोहर ग्रंथ है। उस काव्य के द्वारा कवि ने जीवन के महती प्रश्नों को सुलझाने का कार्य किया है। कहने को तो 'उर्वशी' पुरुरवा और उर्वशी की प्रेम कथा है किंतु उर्वशी के माध्यम से कवि ने जीवन-जगत के प्रश्न उठाए हैं। 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य काम है। मानव मन की वह भावना जो सारी प्रकृति को अपने वश में कर लेती है। ऋगवेद में कहा गया है —

"काम तदग्रे समवर्तताधि... ।"

शास्त्रों और पुराणों में इसकी खूब चर्चा की गयी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऋगवेद काल में ही उर्वशी का आविर्भाव हो गया था। कहा जाता है कि देव-दानव के समुद्र मंथन से जो अप्सरायें निकली थीं उन्हीं में से उर्वशी भी थी। उर्वशी अपने रूप लावण्य में सबसे अधिक सुंदर थी। कहा जाता है कि एक बार नारायण ऋषि ने घोर तपस्या किया। इंद्र को भय हुआ कि कहीं उनकी तपस्या पूर्ण हो गयी तो इंद्रासन छिन जाएगा। इसलिए उसकी तपस्या भंग करने के लिए इंद्र ने कई अप्सरायें भेजी, किंतु निष्फल रहा। ऋषि ने क्रुद्ध होकर एक ऐसी नारी उत्पन्न की जो उन सबसे अधिक सुंदर थी। उसके सौंदर्य के सामने सभी अप्सराओं के रंग फीके पर गए। वे लज्जित होकर वापस लौट गयीं।

पौराणिक कथाओं के आधार पर उर्वशी इंद्रलोक की अप्सरा थी एवं इंद्र के दरबार में प्रमुख नर्तकी थी। अप्सरा होने के कारण उसका सौंदर्य अनुपम एवं शाश्वत था। वह अनिंद्य सुंदरी थी। वह नंदन वन की उषा, सुरपुर की कौमुदी एवं वैरागी हृदय की राग जगाने वाली रति की साकार

P.T.O

प्रतिमा है। वह रमा का स्वरूप, विष्णु की प्राणेश्वरी तथा संपूर्ण भूतल के प्राणियों की तृषा है। कवि ने स्वयं उसकी सुंदरता का आभास करवाया है—

पाषाणों के अनगढ़ अंगों को काट-छाँट
में ही निविड़ स्तनता मुष्टि मध्यमा
मदिर लोचना काम लुलिता नारी।

इस मदिर लोचना का प्रेम पृथ्वी लोकवासी पुरुरवा से हो जाता है। दिनकर का कथन है कि एकबार उर्वशी कुबेर के घर से निकल रही थी कि एक दैत्य उसे उठाकर ले जाने लगा। उर्वशी की त्राहि माम् सुनकर पुरुरवा वहाँ पहुँचा और उसे दैत्य से मुक्त करवाया। इस तरह पुरुरवा और उर्वशी पहली ही नजर में एक दूसरे के प्रेमपाश में बँध गए। चूँकि उर्वशी एक अप्सरा है इसलिए धरती पर आकर वह पुरुष के प्रेम पाश में बँधना चाहती है। उर्वशी जहाँ चक्षु, रसना एवं घ्राण स्रोत की कामनाओं की प्रतीक है, इसलिए वह मानिनी भी है। उसे दुख है कि कि वह पुरुरवा के साथ स्वयं चली आई, उसकी तो इच्छा थी कि पुरुष स्वयं चलकर उसके पास आए।

नारी की स्वाभाविक वृत्ति है कि वह बुद्धि की अपेक्षा भावना पर बल देती है। रूप ही उसके लिए सबकुछ है। वैराग्य और और बुद्धि उसके सामने हेय है। जब कभी पुरुरवा भावलोक से हटकर ज्ञान लोक की बातें करने लगता है वह रक्त की महिमा का गान करके उसे सौंदर्य के धरातल पर ले आती है। उर्वशी भावना की साकार मूर्ति है। बुद्धि अथवा विराग का नाम सुनकर उसकी भृकुटी तन जाती है।

उर्वशी प्रेम की पुजारिन है। दर्शन के अनुसार मनुष्य प्रेम और संन्यास दोनों को प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर और प्रकृति दोनों भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं। वे दोनों प्रतियोगी एवं प्रतिबल नहीं हैं। दोनों एक ही लक्ष्य पर पहुँचने के साधन हैं। पुरुष को चाहिए प्रकृति से नेह लगाकर ही ब्रह्म को प्राप्त करे।

उर्वशी जहाँ प्रेम की सच्ची साकार प्रतिमा है वहीं सच्चे अर्थों में वह जननी भी है। शापवश वह अपने मातृत्व का पालन नहीं कर पाती लेकिन उसके हृदय में

मातृत्व की स्वच्छ पीयूष धारा बहती है। वह अन्य अप्सराओं की तरह नहीं है जो केवल दूसरों को रिझा कर मुक्त विहार करने वाली है। उर्वशी के मातृत्व को उद्घाटित करने वाली इन पंक्तियों को देखा जा सकता है —

केवल भ्रूण वहन, केवल प्रजनन मातृत्व नहीं है,
ममता वही पालती है जो शिशु को हृदय लगाकर।

इस प्रकार दिनकर जी ने उर्वशी को केवल रुचिर लोचना तक ही नहीं रखा है अपितु उसमें पत्नी धर्म, मातृत्व एवं गृहणी के गुणों को आत्मसात करके उसे सर्वांग सुन्दरी बनाकर कविता के साँचे में ढाला है। प्रेमिका के अतिरिक्त उर्वशी एक माँ भी है उसका हृदय वात्सल्य भावनाओं से ओत-प्रोत है। इसलिए तो वह अपने पुत्र आयु को छिप-छिप कर देखती है उसे ऐसा लगता है जैसे अपना सारा प्यारा उस पर उड़ेल दे। वस्तुत: माँ के प्यार की कोई सीमा भी नहीं होती। उर्वशी द्वारा अपनी सखी चित्रलेखा से कही गयी निम्न पंक्तियाँ ही उसके मातृत्व के अमित रूप को प्रतिभासित करने में समर्थ है —

"माँ बनते ही त्रिया कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है
गलती है हिमशिला, सत्य है गठन देह की खोकर
पर हो जाती वह असीम कितनी पयस्विनी होकर।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि उर्वशी का चरित्र श्वेत पुष्प की तरह उज्ज्वल है। एक ओर वह जहाँ मानिनी, प्रेमिका है, आज्ञाकारी पत्नी है वह लोक धरातल पर ममतामयी स्व वत्सला एक माँ भी है। कवि ने उर्वशी के रूप में एक संपूर्ण नारी का एक अनोखा ~~चित्र प्रस्तु~~ चरित्र प्रस्तुत किया है। उर्वशी प्रबंध रचना के मेरुदंड पर सवार अपनी कल्पना और भावों की आधारशिला पर टिकी हुयी एक ऐसी पात्र है जो हिन्दी साहित्य जगत में सर्वथा अनूठी है।

—

P.G. Semester III
CC – X

"Urvashi ka charitra chitran"